ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 12, December 2014

वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की आवश्यकता

डॉ. राम अवतार

एसोशिएट प्रोफेसर - रक्षा एवं स्नातेजिक विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या

सारांश

पृथ्वी पर प्रकृति द्वारा ही विभिन्न रंगों से सजाया हुआ भारत एक सुंदर देश है, जिसमें कहीं दूर तक फैली हरियाली नज़र आती है तो कहीं लम्बा रेगिस्तान, कहीं ठोस पठार है तो कहीं मीलों दूर तक बहती नदियां। इसी प्रकार भारत में विभिन्न जाति, उपजाति, रंग-रूप तथा भाषा में भिन्नता रखने वाले लोग रहते है। भारत की विशेषता इसकी अनेकता में एकता का गुण है और इतने बड़े परिवार को शांतिपूर्ण रूप से चलाने के लिए राष्ट्रीय एकता का होना अतिआवश्यक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात संविधान में किसी जाति या धर्म विशेष को प्रमुखता नहीं दिया गया। संविधान के लिए हम सब एक समान हैं। गुलामी से आजादी पाने के लिए सबसे प्रमुख हथियार एकता है। राष्ट्रीय एकता अपने- आप में एक बहुत बड़ा शब्द है जिसका शब्दों में व्याख्यान कर पाना आसान नहीं। देश के नागरिक जब छुआछूत और जात-पात के भावना से ऊपर उठ कर भाई-चारे के समूह में बंध जाते हैं। जिसमें "राष्ट्र" सभी के लिए सर्वोपरि है उस भावना को राष्ट्रीय एकता के नाम से संबोधित किया गया है। राष्ट्रवादियों के अनुसार- "व्यक्ति राष्ट्र के लिए है, राष्ट्र व्यक्तियों के लिए नहीं" इस दृष्टि से व्यक्ति का राष्ट्र के अभाव में कोई अस्तित्व नही। देश को गुलामी, साम्प्रदायिक झगड़ों, दंगों से बचाने के लिए देश में राष्ट्र एकता का होना अतिआवश्यक है। 200 साल से भी अधिक की गुलामी के पश्चात प्राप्त स्वतंत्रता का हमें सम्मान करना चाहिए तथा किसी भी कारणवश राष्ट्र एकता पर उंगली उठ सके, ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए। ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा यह पाए जाने पर की फूट डालो और राज करो की नीति हम पर काम करेगी। उनका मनोबल बढ़ गया और उन्होंने ऐसा ही किया। एकता में शक्ति है अतः हमें राष्ट्र एकता के महत्व को समझना चाहिए। भारत विभिन्न प्रान्त, धर्म, तथा जाति वाला देश है। यहां कुछ दूरी पर जाते ही भाषा बदल जाती है पर फिर भी भारत की विशेषता उसकी अनेकता में एकता है। हम सभी हर तरह से भिन्न होने के बाद भी एक जैसे हैं। इस वाख्यान का महत्व इस सुप्रसिद्ध गीत से पता चलता है 'हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं, रंग रूप वेष भाषा चाहे अनेक हैं'।

परिचय

राष्ट्र के लिए, राष्ट्रीय एकता, अखंडता के महत्व को समझते हुए देशवासियों के हृदय में एकता की भावना प्रवाहित करने तथा राष्ट्रीय एकता को गंभीरता से लेने के लिए राष्ट्रीय एकता दिवस और राष्ट्रीय एकता सप्ताह दोनों हीं अगल-अगल समय पर आयोजित किया जाता है। दोनों समारोह का उद्देश्य एक है राष्ट्रीय एकता के महत्व के प्रति जन जागरूकता फैलाना। सरदार वल्लभ भाई पटेल के देश को एक सूत्र में पिरों के रखने की सोच को सदैव देशवासियों के स्मृति में जिंदा रखने के लिए, 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 31 अक्टूबर को वल्लभ भाई पटेल के जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई। राष्ट्रीय एकता और अखंडता को उत्सव के रूप में पूरे सप्ताह मनाया जाता है। इससे संबंधित सूची निम्नवत् है।

- 19 नवम्बर राष्ट्रीय एकता दिवस।
- 20 नवम्बर अल्पसंख्यक कल्याण दिवस।
- 21 नवम्बर भाषाई सद्भाव दिवस।

DOI: 10.15680/IJIRSET.2014.0310110

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 12, December 2014

- 22 नवम्बर कमजोर वर्गों का दिवस।
- 23 नवम्बर सांस्कृतिक एकता दिवस।
- 24 नवम्बर महिला दिवस।
- 25 नवम्बर संरक्षण दिवस।

देश को बाह्य (बाहरी) शक्ति से बचाने के लिए सभी देशवासियों में राष्ट्रीय एकता की भावना का होना बहुत जरूरी है। इतिहास गवाह है जब-जब राष्ट्र में राष्ट्रीय एकता को ताक पर रखा गया है तब-तब किसी बाहरी शक्ति ने इसका लाभ उठा कर हमें तोड़ कर रख दिया है। भिन्न-भिन्न समय पर हमारे देश में अनेक शासकों ने शासन किया। जिससे विभिन्न जाति भारत में फल-फूल पायी।

संचार का कोई सशक्त माध्यम न होने के वजह से ब्रिटिश सरकार को यह अनुमान लग गया की वह हमें जाति और धर्म के नाम पर बहुत आसानी से तोड़ सकते हैं और उन्होंने यही किया। हमारे देश के स्वतंत्रता सैनानियों को इस बात का आभास होने पर उन्होंने सर्वप्रथम राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधा। कुछ तो जेल से ही अपने कलम के दम पर देश में राष्ट्रीय एकता के महत्व को बताने चल पड़े। राष्ट्रीय एकता की भावना निहित होने पर देश कम सैन्य शक्ति में भी विजय प्राप्त कर सकता है। इसके विपरीत अनेकों सैनिक तथा हथियार के होने पर भी एकता के अभाव में राष्ट्र जीती हुई बाजी हार जाता है।

विचार – विमर्श

राष्ट्रीय एकता के महत्व को समझना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अभाव में हम पुनः दासतापूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए प्रतिबद्ध हो सकते हैं। राष्ट्र से हम हैं, हम से राष्ट्र नहीं! राष्ट्र के न होने पर हमारा कोई अस्तित्व नहीं इसलिए राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। स्वतंत्र देश के लिए राष्ट्रीय एकता का बहुत महत्व है। राष्ट्रीय एकता का भाव न रखने वाला व्यक्ति मेरे समझ से देशद्रोही है क्योंकि राष्ट्रीय एकता के अभाव में देश कमज़ोर हो जाता है। भारत विभिन्न भाषा, बोली वाला देश है इसके बावजूद अनेकता में एकता के लिए प्रसिद्ध है तथा यही भारत की विशेषता है।

- देश में राष्ट्रीय एकता के महत्व को यदि हम सब समझ जाए तो किसी प्रकार का साम्प्रदायिक दंगा नही होगा, अनेक मासूम लहूलुहान नहीं होगें, लोग अपना जरूरी काम छोड़ धरना प्रदर्शन पर नहीं बैठेगें और पुलिस द्वारा लाठी चार्ज नहीं किया जाएगा।
- राष्ट्रीय एकता के महत्व को समझ लेने पर हम सभी एक हैं, इस धारणा से हम देश की सरकार बनाने में जाति के नाम पर पक्षपात नहीं करेंगे। इससे हम कुशल सत्ताधारी सरकार का चुनाव कर पाएगे जो हमारे देश के हित में सारे निर्णय ले सकेगा।
- हिंदु-मुस्लिम या अन्य कोई धर्म से संबंध रखने से पहले हम भारतीय है, यह राष्ट्रीय एकता की भावना है और इसके महत्व को जान लेने के पश्चात सालों-सालों तक न खत्म होनें वाले मंदिर मस्जिद का विवाद का कोई अर्थ नहीं रहेगा।
- राष्ट्र से प्रेम और राष्ट्रीय एकता की भावना होने पर इससे अलगाववाद के मनसुबे कमज़ोर पड़ते हैं फिर कोई अलग राष्ट्र, राज्य या अलग झंडा की मांग नहीं करेगा।
- हम सभी एक है और हमें एकजुट होकर रहना चाहिए। यह सदैव स्मरण रखना चाहिए की मौकापरस्त (फायदा उठाने वाले लोग) दरारों का लाभ उठाने में देर नहीं करते।
- स्वार्थपरता (selfishness) - 'अपना कामबनता भाड़ (नरक) में जाए जनता', आज अधिकतर राजनैतिक दल का यहीं रवैया है। यह अपने हित के लिए धर्म के नाम पर, मंदिर मस्जिद के नाम पर साम्प्रदायिक दंगा कराने से नहीं चुकते हैं। यह राष्ट्रीय एकता का खंडन करता है।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 12, December 2014

- अशिक्षा - ज्ञान के अभाव में व्यक्ति राष्ट्रीय एकता के महत्व को नहीं समझता और किसी के भड़का देने पर देश में अशांति फैलाने का कारण बनता है।
- आर्थिक और धार्मिक असमानता - आर्थिक औरधार्मिक असमानता राष्ट्रीय एकता का बाधक तत्व है। मनुष्य जन्म से धर्म जाति में भेंद नहीं करता फिर बाद में क्यों? यह नहीं होना चाहिए।

सरदार वल्लभ भाई पटेल देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए अपने दिए गए योगदान के लिए जाने जाते हैं। अतः 31 अक्टूबर 2014, देश के प्रथम उपप्रधानमंत्री तथा प्रथम गृहमंत्री के 144 वें जन्म दिवस के अवसर पर उस समय के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा (स्टैच्यू ऑफ यूनिटी) के रूप में सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति पर मालार्पण किया और देशवासियों से रन फॉर यूनिटी, मैराथन दौड़ में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आग्रह किया। इस मैराथन दौड़ का उद्देश्य लोगों में राष्ट्रीय एकता के महत्व को बताना एवं फिर से एक बार राष्ट्र को एकता के सहारे बंद मुट्ठी के रूप में ढ़ालना था। राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए ही कानून की किताब (संविधान) को नीतियों से भरा गया है। स्वतंत्र भारत के लिए राष्ट्रीय एकता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अतः हमें हर हाल में राष्ट्रीय एकता को बनाए रखना चाहिए।

परिणाम

भारत एक संघ राज्य है. अनेक राज्यों या प्रदेशो में निवास करने वाले, भिन्न भिन्न रूप रंग, आचार विचार, भाषा और धर्म के लोग यहाँ निवास करते है. इन सभी की स्थानीय संस्कृतियाँ है. इन सबसे मिलकर एक भारतीय संस्कृति का विकास हुआ है. हम सभी भारतीय है, यही भावना भारत को राष्ट्र का रूप देती है. अनेकता में एकता की यह भावना ही हमारे राष्ट्र का आधार है. किसी ने ठीक ही कहा है. राष्ट्रीय एकता का अर्थ है भारतीय के रूप में हमारी पहचान. सभी धर्मों परम्पराओं, आचार, विचारों, भाषाओँ और उप्संस्क्रतियों का आदर करना, भारत भूमि और भारत के सभी निवासियों के प्रति प्रेमभाव रखना यही राष्ट्रीय एकता का स्वरूप है. राष्ट्रीय अखंडता का अर्थ है, राष्ट्र की भूमि के हर भाग की सुरक्षा करना.

देश को बाटने वाली विदेशी आक्रमण या षड्यंत्र को विफल बनाना और आंतरिक एकजुटता बनाए रखना, यही राष्ट्रीय अखंडता की भावना है. भारतवासियों को हर कीमत पर राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखना चाहिए.

आज हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता संकट में है. इस स्थति के लिये सर्वाधिक दोषी हमारे राजनेता है. विदेशी लोगों ने फूट डालों और राज करो' की निति अपनाकर सैकड़ो वर्षों तक हमे गुलामी भोगने के लिए मजबूर किया था.

हमारे देशी शासक भी सता की लोलुपता से अंधे होकर यही निति अपना रहे है. इन्होने अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए जनता को जाति, धर्म, आरक्षित, अनारक्षित, अगड़े, पिछड़े, अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक और प्रादेशिक कहरता के आधार पर बाट दिया है, इनको न देश की एकता की चिंता है न अखंडता की.

इनको केवल अपना वोट बैंक बनाए रखने की चिंता है. ये लोग बड़बोले, कायर और देशद्रोही है, जनता को इनके असली रूप को अपनी शक्ति को पहचान लेना चाहिए और इनको सही रस्ते पर आने के लिए मजबूर कर देना चाहिए.

DOI: 10.15680/IJIRSET.2014.0310110

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 12, December 2014

राष्ट्र की अखंडता की रक्षा के लिए सेना है. बाहरी आक्रमण अथवा राष्ट्रीय संकट की घड़ी में सेना ही आगे आती है. लेकिन राष्ट्रीय एकता और अखंडता की रक्षा में देश के हर नाग्रिक्क की भी भूमिका होती है. अपने प्रतिनिधि चुनते समय हमे उनके पूर्व इतिहास और चरित्र पर ध्यान देना चाहिए. लोभ लालच या स्वार्थवंश ऐसा कोई कार्य नही करना चाहिए, जिससे हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता पर संकट आए.

भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता की साधना हैं. भारत विविध क्यारियों से सजा एक विशाल उद्यान हैं. नाना प्रकार के रत्नों से गुंथा मानवता के कंठ का हार हैं. किन्तु जब उपवन की क्यारियाँ द्रोह पर उतारू हो जाए, माला के फूल चूल बनकर चुभने लगे तो उस भारती कल्पना का क्या अंत होगा?

रत्नहार के टूटने पर हीरा हो गया पन्ना, नीलम हो या पुखराज, सब धरती पर बिखर जाते हैं. संस्कृति की सुरभि, इतिहास का गौरव और संगठन की शक्ति का लाभ तभी तक मिलेगा, जब तक राष्ट्रीय एकता सुरक्षित रहेगी. देश की अखंडता यदि संकट में पड़ी तो गुलामी के द्वार फिर से खुल जाएगे.

निष्कर्ष

राष्ट्र के तीन अनिवार्य अंग हैं- भूमि, निवासी और संस्कृति. एक राष्ट्र के दीर्घ जीवन और सुरक्षा के लिए इन तीनों का सही सम्बन्ध बना रहना परमआवश्यक होता हैं. यदि किसी राष्ट्र की भूमि से वहां के राष्ट्रवासी उदासीन हो जाएगे तो राष्ट्र के विखंडन का भय बना रहेगा.

1962 में चीन का आक्रमण और भारत की हजारों किलोमीटर भूमि पर अधिकार इसका ज्वलंत उदाहरण हैं. राष्ट्र की भूमि माता के तुल्य हैं. माता भूमि पुत्रोः पृथ्व्या यह भावना राष्ट्र की अखंडता के लिए परम आवश्यक हैं. राष्ट्र जनों को एक सूत्र में बाँधने वाली राष्ट्रीय संस्कृति होती हैं.

केवल एक स्थान पर निवास करने वाला जनसमूह राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकता, जब तक कि वह परस्पर सांस्कृतिक सूत्र से न बंधा हो. धार्मिक सद्भाव सहयोग, पर्व, उत्सव कला और साहित्य संस्कृति के अंग हैं. स्पष्ट हैं कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता एक राष्ट्र के जीवन और समृद्धि के लिए अनिवार्य शर्तें हैं.

आज भारत के अस्तित्व और सुरक्षा को गम्भीर चुनौतियाँ भीतर और बाहर दोनों से हैं. भीतर से प्रादेशिक संकीर्णता, धार्मिक असहिष्णुता, नक्सलवाद, आतंकवाद, जातीय संकोच आदि स्वार्थपूर्ण राजनीति देश को विखंडन की ओर ले जा रही हैं

और पड़ोसी देशों के षड्यंत्र हमकों तोड़ने के लिए कटिबद्ध हैं.कुछवर्षों पूर्व संसद पर हुआ हमला तथा समय समय पर मंदिरों पर हुए आक्रमण देश की एकता को विखंडित करने की साजिश के स्पष्ट प्रमाण हैं.

इतिहास गवाह है कि भारत भूमि पर विदेशी आँखे निरंतर ललचाती रही हैं. जब जब हम एक रहे, विजयी रहे, आक्रमण की बाढ़ हमारी एकता की चट्टान से टकराकर चूर चूर हो गई और जब हम बिखरे,

हमने मुहं की खाई, हम परतंत्र हुए, हजारों वर्षों की अपमानजनक गुलामी हमें यही सिखाती हैं कि एक होकर रहो और एक राष्ट्र बने रहो.

विविध धर्मों, आचारों, भाषाओं और प्रदेशों वाले देश को तो एकता की अत्यंत आवश्यकता होती हैं. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने आपसी भेदभाव को मिटाकर एक होने का संदेश दिया हैं.

क्या साम्प्रदायिक भेद से है एक्य मिट सकता अहो
बनती नहीं क्या एक माला, विविध सुमनों की कहो

हर नागरिक का यह परम धर्म है कि राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य से परिचित रहे और उसका पालन करे. छात्रवर्ग को अपनी राष्ट्रीय संस्कृति और इतिहास का आदर करना चाहिए और अपने जीवन में उसे झलकाना चाहिए.

समाज के अन्य वर्गों का उत्तरदायित्व भी इतना ही महत्वपूर्ण हैं जितना वैज्ञानिक, व्यापारी, श्रमिक या श्रीमान के लिए हैं. सबकों राष्ट्र का हित ध्यान में रखकर चलना चाहिए. राष्ट्र जिएगा तो सब जिएगे. यदि राष्ट्र टूटा तो सबको धराशायी और धूल धूसरित होना पड़ेगा.

अंत में यही कहना पड़ता हैं कि अनेकता में एकता और भारत की अखंडता में भारतीयों के लिए जीवन मरण का प्रश्न हैं. हमें आंतरिक मन से एकता का आचरण करना ही होगा.

रखे परस्पर मेल मन से छोड़कर अविवेकता
मन का मिलन ही मिलन है, होती उसी से एकता

संदर्भ

1) "'नेशनल यूनिटी गवर्नमेंट' (एनयूजी) डील (पूरा पाठ)" . अफगानिस्तान विश्लेषक नेटवर्क - अंग्रेजी I 20 सितंबर 2001I
2) रयान, इमोन. "ईमोन रयान: हमें राष्ट्रीय एकता सरकार की आवश्यकता क्यों है" I आयरिश टाइम्स I
3) मैक्गी, हैरी. "लेबर टीडी का कहना है कि पार्टी को सरकार में हिस्सा लेने पर विचार करना चाहिए" I आयरिश टाइम्स I2000
4) लेही, पैट. "पैट लेही: पांच कारणों से राष्ट्रीय एकता की सरकार एक बुरा विचार है" I आयरिश टाइम्स I
5) http://setopati.net/politics/6831/ [डेड लिंक]
6) रत्नायके, के. "श्रीलंका के राष्ट्रपति ने "राष्ट्रीय सरकार" बनाई " . www.wsws.org I
7) "कैन: पॉलिटिक्स: न्यू अल्स्टर मूवमेंट (1971) 'द रिफॉर्म ऑफ स्टॉर्मॉन्ट' " . cain.ulster.ac.uk I
8) मैकब्राइड, सैम. "सिलोस, गोपनीयता और शांत सौदे: कैसे शिथिलता स्टॉर्मॉन्ट का आदर्श बन गया" I आयरिश टाइम्स I2011
9) "एक आधिकारिक विपक्ष के लाभ और शीर्षक का दावा करने की हड़बड़ी" . स्लगर ओ'टूल I2000
10) "सैम मैकब्राइड: एलायंस अपने सदस्यों को बताता है कि वह अनिवार्य गठबंधन को समाप्त करना चाहता है (और चार अन्य चीजें जो हमने इस सप्ताह सीखीं)" I www.newsletter.co.uk I2001

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 12, December 2014

11) "यूनाइटेड इन रिमेंबरेंस, डिवाइडेड ओवर पॉलिसीज" । प्यू रिसर्च सेंटर । 1 सितंबर 2011
12) स्ट्रोह, अलेक्जेंडर (2010)। "अधिनायकवादी खेल के चुनावी नियम: रवांडा में आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अलोकतांत्रिक प्रभाव"। जर्नल ऑफ ईस्टर्न अफ्रीकन स्टडीज । 4 (1): 1-19

IJIRSET